- Research Papers published in UGC care list journals

Name of Faculty	Dr. Saroj Patil
Name of Department	Hindi
Academic Year	2023-24

Sr. No.	Name of Research Papers	Name of the UGC Care list Journal and Publication	Page No
1.	**विश्व शांति एवं विकास में सुमित्रानंदन पन्त के काव्य का योगदान**	**संशोधक** वर्ष : 91, दिसंबर 2023, पुरवणी विशेषांक 06 ISSN NO. 2394 -5990 प्रकाशक – इतिहासाचार्य वि.का. राजवाड़े संशोधन मंडल, धुळे	45 to 47

Scanned with CamScanner

UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

• वर्ष : ९१ • डिसेंबर २०२३ • पुरवणी विशेषांक ०६

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ,धुळे

Scanned with CamScanner

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक।।

पुरवणी अंक ६ – डिसेंबर २०२३ (त्रैमासिक)

• शके १९४५ • वर्ष : ९१ • पुरवणी अंक : ६

संपादक मंडळ

• प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे • प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
• प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा • प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

• डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे • प्रा. डॉ. सुभाष वाघमारे • प्राचार्य डॉ. राजेंद्र मोरे

* प्रकाशक *

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

मूल्य रु. १००/-
वार्षिक वर्गणी रु. ५००/-, आजीव वर्गणी रु. ५०००/- (१४ वर्षे)

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने
'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, वारजे-माळवाडी, पुणे ५८.

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकेच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले आहे. या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

Scanned with CamScanner

ISSN No. 2394-5990

11. विश्वशांति एवं विकास में सुमित्रानंदन पंत के काव्य का योगदान
- डॉ.सरोज पाटील ---------- 45

12. विश्वशांति की प्रासंगिकता ('आना इस देश' उपन्यास के संदर्भ में)
- डॉ. बाळासाहेब शिवाजी बलवंत ---------- 49

13. विश्व शांति एवं विकास में हिंदी उपन्यास का योगदान
(राही मासुम रजा के 'आधा गाँव'उपन्यास के विषेश संदर्भ में)
-डॉ.भारत श्रीमंत खिलारे ---------- 51

14. विश्व शांति एवं विकास में 'कामायनी' महाकाव्य का योगदान
- डॉ. निर्मल चक्रधर ---------- 57

15. 'अंधायुग' गीतिकाव्य में चित्रित युद्ध के दुष्परिणाम और विश्वशांति का संदेश
-प्रा.कोळी सोमनाथ तातोबा ---------- 60

16. हिंदी कहानी में मानवता और विश्वशांती
-डॉ. महीपति जगन्नाथ शिवदास ---------- 62

17. सामाजिक प्रगति में अब्दुल बिस्मिल्लाह का उपन्यास साहित्य
-डॉ.इब्रुस एस.शेख ---------- 65

18. विश्व शांति एवं विकास में हिंदी सिनेमा का योगदान
-डॉ. प्रा. संघप्रकाश दुड्डे ---------- 70

19. आंबेडकरी काव्य में मानवतावादी संस्कृति के वैश्विक मूल्य
-डॉ. रगडे परसराम रामजी ---------- 75

20. विश्वशांती एवं विकास में सर्वेश्वर के नाटकों का योगदान
-डॉ.संग्राम यशवंत शिंदे ---------- 79

21. पौराणिक साहित्य में वसुधैव कुटुंबकम् की भावना : एक अध्ययन
-डॉ. गीतिका एस. तंवर ---------- 82

Scanned with CamScanner

ISSN No. 2394-5990

विश्वशांति एवं विकास में सुमित्रानंदन पंत के काव्य का योगदान

डॉ.सरोज पाटील
प्रोफेसर
श्री शहाजी छ. महाविद्यालय, कोल्हापुर
मो.9921770661
Email-saroj120575@gmail.com

सारांश :

हिंदी साहित्य के चर्चित छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की काव्ययात्रा प्रकृति, मानवतावाद और दर्शन इन पडावों से युक्त रही। सन 1932 से 1942 तक के व्दितीय पडाव में पंत जीवन की विषमताओं, समस्याओं पर भाष्य करते दिखाई देते हैं। पंत लिखित युगांत, युगवाणी, युगांतर, ग्राम्या, लोकायतन आदि कृतियां मुख्य रुप में इस भाष्य की प्रस्तोता बनी है। इन कृतियों में पंत का गांधीवाद चिंतन स्पष्ट रुप से उजागर हुआ है। पंत केवल राष्ट्रीय स्तर पर नही तो वैश्विक स्तर पर मानवतावाद की स्थापना का स्वप्न देख रहे थे। पंत वैश्विक स्तर पर गांधीवादी मूल्यों की स्थापना कर संपूर्ण विश्व को आत्मिक शांति एवं उन्नति प्रदान करा देना चाहते थे। अपनी आरंभिक कृतियों में प्रकृति के प्रति अत्याधिक आकर्षित पंत ह्रयुगांतफ इस रचना में मानव को केंद्र में रखते दृष्टि गोचर होते हैं। यहा पर पंत मानवीय पूर्णता की खोज करते दिखाई देते हैं । आत्मिक दृष्टि से उन्नत मानव ही विकास की प्रक्रिया से जुडकर विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है इस पर पंत का सौ प्रतिशत विश्वास था। अतः पंत की कृतियां देशप्रेम, विश्वबंधूत्व की भावना से ओतप्रोत, मनुष्य जाति की आत्मिक उन्नति के लिए प्रेरक, आज के संभ्रमित जीवन की दिशादर्शक बनने की सामर्थ्य रखनेवाली, विश्वशांति की आवश्यकता उजागर करनेवाली, जनमानस को विकास की प्रक्रिया से जोडनेवाली, जीवनमूल्यों से परिपूर्ण, मार्गदर्शक एवं मांगलिक हैं ।

मूलशब्द : जनमानस, जीवनमूल्य, लोकमंगल, शांति, मानवतावाद, विकास.

प्रस्तावना :

साहित्य जगत हमेशा ही लोकमंगल की कामना महसूस करना हुआ अपना साहित्यिक योगदान देता रहा है। विश्वशांति और जन विकास एकदूसरे से आबध्द दो अहम मुद्दे हैं जो लोकमंगल का मार्ग प्रशस्त करते हैं । सुमित्रानंदन पंत इस मार्ग के चर्चित हस्ताक्षर हैं, जिनकी रचनाए शांति और विकास को वैश्विक स्तर पर स्थापित करना चाहती हैं। इसके लिए पंत गांधीवादी जीवनमूल्यों के स्वीकार की आवश्यकता पर जोर देते हैं। राष्ट्रीय स्तर के साथ साथ वैश्विक स्तर पर मानवतावाद की स्थापना का सपना देखने वाले पंत की कृतियाँ बिल्कुल भी संकुचित दायरें में आबध्द नहीं हैं। पंत की कृतियाँ गांधीवाद की हिमायती है। पंत वैश्विक स्तर पर गांधीवादी मूल्यों की स्थापना कर संपूर्ण विश्व को आत्मिक शांति और विकास की प्रक्रिया से जोडना चाहते हैं । इस दृष्टि से पंत लिखित युगांत, युगवाणी, युगांतर, ग्राम्या, लोकायतन आदि कृतियाँ विशेष महत्वपूर्ण हैं । सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, जातिभेद का विरोध, शिक्षा, मानवतावाद आदि के स्वीकार से ही मानवजीवन के सर्वांगीण विकास की संभावना पर पंत विश्वास रखते हैं। पंत की दृष्टि में इन मूल्यों के स्वीकार के बिना विश्वशांति एवं विकास का सपना पूर्ण करना असंभव है।

सत्य और अहिंसा :

नवसंस्कृति के दूत गांधी ने सत्य और अहिंसा के अवलंब से आत्मा को उन्नत बनाने की सीख दी । इसे हम विश्वमानवतावाद का सार कह सकते हैं।

गांधी व्दारा अहिंसा के अवलंब को अल्बर्ट आईन्स्टीन ने गांधी की सबसे बडी विजय माना हैं। हिंसा के बिना क्रांति यही था गांधी का तरीका, जिससे उन्होंने भारत को आजादी दिलाई मेरा यह अटूट विश्वास है कि सब देशों के व्दारा विश्व में शांति लाने की समस्य भी गांधी के तरीके को व्यापक पैमाने पर लागू करने से ही हल हो सकती हैं ।' (पृ.137, गांधी विचार और साहित्य) आइन्स्टीन की नजरों में युग के सबसे महान राजनेता गांधी व्दारा मानव को दिया हुआ अहिंसा का संदेश विश्वशांती की स्थापना का मुख्य कारण बनने की क्षमता रखता है। समस्त विश्व द्वारा इसका अवलंब जरुरी हैं ।

सत्य और अहिंसा इन दो तत्वों को साथ लिए गांधी ने भारतीय जनक्रांति के सूत्र अपने हाथों में ले लिए । अहिंसा से

Scanned with CamScanner

प्रभावित भारतीय जनमानस की शक्ति को पूरे विश्व ने सलाम किया । पंत ने 'लोकायतन' में लिखा है,

'भारतीय स्वातंत्र्य युध्द या मनुष्यत्व का भू पर युग रण,
अतः रिक्त बहिः समृध्द जग हिंसा स्पर्धा का था प्रांगण
सत्य अहिंसा से वे सविनय युग जन का करने संचलन,
हिंसक पाशवता के पूजक चीन्हें मानवता का आनन।'
(पृ.59, लोकायतन)

सत्य और अहिंसा पर नितांत विश्वास रखनेवाले पंत ने सत्य और अहिंसा को संस्कृति के दो आवश्यक उपादान माना है। कवि की दृष्टि में अहिंसात्मक होना अर्थात सुसंस्कृत होना है जो मानवतावाद की पहचान है। पंत ने अटूट विश्वास जताया है कि सत्य और अहिंसा में इतनी अपूर्व क्षमता है कि वे तत्व बहुत जल्दी भारत की सीमा लांघकर पूरे विश्व में स्थापित हो जाएंगे । पूरे विश्व को मानवी मूल्यों से भर देंगे ।

'युगपथ' की इश्रध्दा के फूलफ यह कविता इसी महान जीवन दर्शन को प्रस्तुति देती है। कवि लिखते हैं,

'सत्य अहिंसा बन अंतरराष्ट्रीय जागरण,
मनवीय स्पर्शों से भरते धरती के व्रण'
(पृ.31, युगपथ, रचनावली खंड 2)

सत्य और अहिंसा इन तत्वों में इतनी ताकत है कि संपूर्ण विश्व में कितना ही परिवर्तन क्यों न आ जाए पर वे मानव के इष्ट बने रहेंगे ।

'युगवाणी' की 'बापू' कविता में कवि ने यह विश्वास जताया है,

'नहीं जानता युग विवर्त में होगा कितना जनक्षय
पर मनुष्य को सत्य अहिंसा इष्ट रहेंगे निश्चय ।'
(पृ.81, युगवाणी, बापू)

पंत का शतप्रतिशत विश्वास था कि सत्य अहिंसा आदि तत्वों को संयुक्त रुप से अपनाकर भूनिर्माण के महत कार्य को सुआकार दिया जा सकता है। गांधी अहिंसा को एक व्यापक गरिमा प्रदान कर चुके हैं। इसे हम विश्वमानवतावाद की स्थापना के लिए उपयोग में ला सकते है।

सत्याग्रह :

सत्य के स्वीकार का आग्रह सत्याग्रह है। आक्रमकता का सामना आक्रमकता से नहीं किया जाना चाहिए या अपने शत्रूओं से भी प्रेमभाव रखा जाना चाहिए इस सीख को लोगों के सामने रखनेवाले गांधी भारतीय इतिहास की पहली व्यक्ति थी जिसने असहकार को दो चार व्यक्तियों के बीच की व्यक्तिगत भावना से उपर उठाकर व्यापक स्तर पर एक शस्त्र के रूप में जनमानस पर आरोपित किया, जिस पर लोगों का विश्वास धीरे धीरे दृढ होता गया। क्योंकि जनमानस ने यह देखा कि गांधी का असहकार गैर जिम्मेदार नहीं था। गांधी ने हर अन्याय का, बुराई का प्रतिकार उतनी ही उत्कटता से किया जितना एक हिंसक व्यक्ति करता, पर उनके प्रतिकार में घृणा या क्रूरता नहीं थी। वहाँ पर प्रेमभाव था। पूरे विश्व के प्रति प्रेमभाव, आत्मीयता लेकर वे चलते रहे, जिसकी ताकत हिंसा से खूब बढ़कर थी ।

पंत गांधी दर्शन के सत्याग्रह इस मुद्दे पर शतप्रतिशत विश्वास रखते है। ह्नलोकायतनफ इस कृति में पंत ने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह इन तत्वों की व्यापक चर्चा की है । इस कृति की प्रस्तावना में पंत लिखते हैं, ''गांधी जी के अतिरिक्त इसके शेष पात्र कल्पित होने पर भी उनके द्वारा मेरे कवि जीवन की अनुभूति एवं सत्य को वाणी मिली है। इसके चरित्र केवल मानव चेतना के पालकी वाहक भर है। यदि मेरा कवि प्रयास इस संक्रांति काल की युगगाथा के भीतर से विकासकामी मानवता के जीवनसत्य की झांकी प्रस्तुत कर सका तो मैं अपने सृजन श्रम को सफल समझूंगा।''(प्रस्तावना- 'लोकायतन') यह कथन स्पष्ट करता है कि गांधीदर्शन के इन मुद्दो के जरिए मानवता के विकास की संभावना पर पंत विश्वास रखते थे ।

'लोकायतन' में दांडी यात्रा प्रसंग के रेखांकन में पंत ने लिखा है,

'नमक बनाना ध्येय नहीं था तीस कोटि भारत जनगण का
वह प्रतीक विद्रोह पर्व था, दृश्य ऐतिहासिक युग क्षण का
गिने-चुने साधक संग लेकर बढे असंख्य चरण, दो पग बन
वह प्रेरित स्वर्गिक मुहूर्त था, जड भूशीला बनी नवचेतन'
(पृ.56, लोकायतन)

विश्वशांति एवं मानव के विकास के लिए दांडीयात्रा जैसे प्रसंगों की वैश्विक स्तर पर मंथन की आवश्यकता पंत ने महसूस की थी । क्योंकि दांडी यात्रा के जरिए सामूहिक रुप से आक्रमकता, अन्याय का सामना शांति एवं जिम्मेदारी के साथ हुआ था । विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त करनेवाली यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अहम घटना थी । 'युगांतर' रचना भी इस दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है।

जातिभेद का विरोध :

जातिभेद की भावना राष्ट्रीयत्व को भंग करती है। यह बात भारतीयों के सामने रखते हुए विकास एवं शांति के लिए इस भावना से उभरने की आवश्यकता पर गांधी ने बल दिया था। पंत इस मुद्दे को पूर्णतः स्वीकार करते हैं। जाति व्यवस्था का विरोध करते हुए 'अंतिम पैगंबर' कविता में उन्होंने लिखा है,

'जाति व्यर्थ है सब समान है, मनुज ईश के अनुचर है ।'
(पृ. 13, स्वर्णधूलि)

Scanned with CamScanner

ISSN No. 2394-5990

पंत की दृष्टि में जातिवाद मानवतावादी राह की सबसे बडी बाधा है । जातिभेद को दूर किए बिना हम विश्वमानवतावाद की स्थापना नहीं कार सकते । मलोकायतनफ में उन्होंने लिखा है,

'गत जाति पाति वर्णोंफ के विष से विमुक्त कर जन-मन
जड़ रूढी रीति का तम हर, युग दीपित कर भू
हमकों निर्मित करना नव राष्ट्रीय मानस दिगविस्तृत
चैतन्य धरा - जीवन का मन कर पूर्ण समन्वित ।'
(पृ-96 , लोकायतन)

जाति भेद, पुरातन परंपराएं आदि के कारण व्याप्त विषम वातावरण को मिटाकर जनमानस को विकास की राह से जोड़ने के विचार से पंत प्रेरित हैं । इस विचार को पूर्णत्व की ओर ले जाने के लिए कवि प्राकृतिक उपादानों की सहायता लेते हैं 'युगपथ' के आरंभ में कोकिल को संबोधित करते हुए वे लिखते हैं,

'गा कोकिल बरसा पावक कण
नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन,
ध्वंस, भंग जग के जड बंधन
जाति, कुल, वर्ण वर्ण घन
अंध भीड से रूढी रीति छन ।' (पृ. 7 युगपथ)

कवि संसार के इन बंधनों को विकास में बाधक मानते हुए उन्हें समाज जीवन से हटा देने की कामना रखते हैं, ताकि इन संकिर्ण बंधनों से मुक्त समाज वैश्विक स्तर पर मानवतावाद की स्थापना कर पाएं । विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त करें। स्वर्ण धूलि, स्वर्ण किरण, युगपथ आदि कृतियां इस विचार की विशेष वाहक बनी है।

पंत मानव को जातिवाद की संकुचितता से हटाकर उसे व्यापक मनुजत्व में बंधा देखना चाहते हैं। ञमनुजत्वफ कविता में उन्होंने लिखा है,

'छोड नहीं सकते रे यदि जन
जाति वर्ग नये, धर्म के लिए रक्त बहाना
मानव होकर रहे धरा पर
जाति वर्ण, धर्मों के उपर
व्यापक मनुजत्व में बंधकर।' (पृ.329, स्वर्णधूलि)

पंत का विश्वास था कि जातिभेद की भावना से उपर उठा मनुष्य ही व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास की प्रक्रिया से जुड सकता हैं।

शिक्षा :

शिक्षा विकास और शांति की राह की नींव है। गांधी जनसामान्यों के लिए ऐसी शिक्षा की कामना रखते थे जो मानव को मानवतावाद सीखाएं । मनुष्य को अपनी सीमाओं का ज्ञान करा दें । जनहीत की कामना से कर्मरत बनाएं।

पंत गांधी के इन विचारों का स्वीकार करते दिखाई देते हैं। लोकायतन के 'कलाद्वार' में उन्होंने लिखा है,

'भला उस शिक्षा का क्या मूल्य
कर्म फल करें न भू हित दान ?
वहीं शिक्षा जो आंखे खोल
मनुज सीमाओं को दे दान
प्राप्त हो नव भू जीवन मूल्य
मनुजता का हो पुनरुत्थान ।' (पृ.160, लोकयातन)

मनुजता का पुनरुत्थान करने की क्षमता से परिपूर्ण शिक्षा पर पंत ने विश्वास दर्शाया है। पंत पाठकों से सवाल करते हैं कि जो शिक्षा मनुष्य को धरती के प्रति समर्पित न करें, धरती के प्रति उसे अपने कर्तव्यों का ज्ञान न करा दें, विकास की राह न दिखाए ऐसी शिक्षा का क्या लाभ?

अतः पंत भारत में ऐसी शिक्षा के अवलंब की जरुरत मानते हैं जो भारत की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल हो तथा लोगों के अर्थार्जन में सहायक सिध्द हो। पंत 'पुरुषोत्तम राम' इस रचना में लिखते हैं,

'शिक्षा पध्दति निश्चय ही हमें बदलनी होगी
जिस शिक्षा से सुख सुविधा दुह सके दक्ष कर
उसे बना कृषि - प्रविधि, अर्थ उद्योग परक अब
हमें राष्ट्र रचना हित अगणित जन, करपट मन
प्रस्तुत करने होंगे, नये रक्त से दीपित ।'
(पृ.110, किरण वीणा)

सुनियोजित शिक्षा की आवश्यकता पर पंत ने बल दिया है। तत्कालीन भारत में प्रौढ शिक्षा की आवश्यकता पर गांधी ने बल दिया था। इसका स्वीकार करते हुए पंत 'लोकायतन' में लिखते हैं,

'बुला जन शिक्षा पथ अनिवार्य,
रात्रि को पढते स्त्री- नर प्रौढ,
समापन कर निज दैनिक कार्य ।'(पृ.178, लोकायतन)

पंत ने व्यक्तिगत दैनिक कार्य समाप्त कर रात्रि के समय पढ रहे प्रौढ स्त्री-पुरुष वाले दृश्य को भारतीय समाज के विकास का शुभारंभ माना है। कवि कि दृष्टि में आधुनिक शिक्षा, पध्दति को जीवनोपयोगी बनाने के लिए उसमें सुधार की आवश्यकता है। पंत का शतप्रतिशत विश्वास था कि शिक्षा के जरिए ही हम देश को विकास की राह ले जा सकते हैं ।

मानवतावाद :

धरती पर रहनेवाले समस्त जीवित प्राणियों में से सबसे विचारशील तथा अपनी भावनाओं को शब्दों के माध्यम से वाणी देनेवाला समूहप्रिय, विकसनशील जीव मानव कहलाता

Scanned with CamScanner

है। प्रत्येक वर्ग के संपूर्ण विकास और उसके मंगल की कामना मे परिपूर्ण विचार और कृति मानवतावाद है।

आज विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया में अत्याधिक बौध्दिक विकास के फलस्वरुप मनुष्य जीवन अनास्था से भर गया है। सामंजस्यपूर्ण व्यवहार और सहज जीवनशैली कहीं लुप्त हो गई है। मानवीय संवेदनाएं खोखली बनती जा रही है। ऐसे में साहित्य मानव जीवन का दृढ आधार बन सकता है।

छायावाद के प्रमुख हस्ताक्षर पंत आरंभ से ही मानवतावादी कवि रहे हैं। पंत का मानवतावाद बडा व्यापक है। वह मानव विकास की कामना रखता है। कवि मानवतावाद की स्थापना के लिए जनमानस की आत्मिक शुद्धी की आवश्यकता पर जोर देते है। वे मनुष्य जीवन में जितना कुछ शुद्र, घृणित, भेदजन्य, विषम हैं उसे मिटाकर मानव का हृदय अक्षय, शुद्ध, सत्य आदि तत्वों के साथ नवविज्ञान के संचय से भर देने की इच्छा रखते हैं, ताकि मानव का भावी जीवन जोर्तिमय बन जाए । युगवाणी की 'उद्बोधन' कविता इस दृष्टि से विशेष बनी है।

सामूहिक तौर पर मानवतावाद की स्थापना का स्वप्न देखने वाले कवि पंत चाहते हैं कि इसके लिए धरती पर जन्म लेनेवाला प्रत्येक व्यक्ति जाति, धर्म, वर्ग, वर्ण भेद की भावना से उपर उठे तथा प्रत्येक परिचित अपरिचित के प्रति निज बंधुत्व की भावना रखे। परस्पर स्नेह बंधनों में बंधा व्यापक मनुजत्व की भावना को लेकर इस धरती पर अपना अस्तित्व सिद्ध करें । फिर वह क्षण दूर नहीं कि धरती का प्रत्येक कोना दिप्त हो उठेगा । 'स्वर्णधूलि' की 'मनुजत्व' कविता इस विचार को काफी प्रभावी रूप में पाठकों के सामने रखती हैं ।

अखिल विश्व में मानवतावाद की स्थापना का स्वप्न देख रहे पंत इस कार्य में किसी भी प्रकार के अवरोध की कल्पना से ग्रस्त नहीं हैं । कवि को विश्वास है कि जिस क्षण भाव और कर्म एकरत हो जाएंगे, धरती पर नवसंस्कृति स्थापित हो जाएगी। जहाँ पर ज्ञानवृद्धि की कामना से युक्त मानव में निष्क्रियता का नामोनिशान नहीं होगा। मृत आदर्शो के बंधनों से मुक्त मानव सक्रिय जीवन का अधिकारी होगा । मानव का मन मानव के प्रति शंकित नहीं रहेगा । मानव विकास की राह गतिमय रूप में अग्रेसर होगा । सर्वत्र शांति और अमन होगा। अपने विश्वास को पूर्ण रुप देने के लिए पंत जनसमुदाय को अपने लक्ष्य की ओर अग्रेसर बनाते हुए कहते हैं,

"बांधो छवि रे नव बंधन बांधों
नव नव आशा आकांक्षाओं में
तन मन जीवन बांधों।" (पृ. 17 युगपथ)

पंत की कवि दृष्टि यह महसूस कर रही है कि नव आकांक्षाओं के साथ मानवतावाद कि राह चल पड़ा जनसमुदाय विश्वशांति और विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा।

निष्कर्षत:

आज के इस विषम दौर में जहां सर्वत्र नीतिमूल्यों का ऱ्हास हो रहा है । विश्वशांति की संकल्पना में छेद के मौके सामने आ रहे हैं। ऐसे में मानव विकास एवं विश्वबंधुत्व की भावना से ओतप्रोत पंत की कृतियों में पाठकों को कृतिशील एवं चिंतन मग्न बनाने की अपूर्व क्षमता है। ये कृतियां मानवजाति की उन्नति के लिए प्रेरक है। विश्वशांति की आवश्यकता को सौ प्रतिशत पाठकों के मन पटल पर स्थापित करने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

आधार ग्रंथ – सुमित्रानंदन पंत रचनावली खंड 1 से 7

सहायक ग्रंथ –

1) पंत प्रसाद और मैथिली शरण – रामधारी सिंह 'दिनकर', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 2009
2) पंत काव्य में समाज एवं संस्कृति – डॉ.गीता दवे, गरिमा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2002
3) सुमित्रानंदन पंत के काव्य विकास का अध्ययन - डॉ.रीता मेहरोत्रा अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2012
4) विश्व की समस्याओं पर गांधी – डॉ.राजनारायण पांडेय, ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2010
5) गांधी का अनन्य नेतृत्व – पास्कल एलन नाझरथ, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2012

Scanned with CamScanner